IOSR Journal of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 25, Issue 7, Series 1 (July. 2020) 61-64
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

संत चरण दास के काव्य में मनसोपचार सेवा

सिया राम मीणा

सह आचार्य , हिन्दी विभाग , बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय , अलवर (राजस्थान) ३३१००१

शोध सारांश

संत चरणदास के काव्य में वैधी पूजा का अष्टयाम विधान सर्वमान्य है। इनके अनुसार 'मांहैं चन्दन पाति, मांहैं पूजा मांहैं देवा' जैसी मान्यता को समर्थन मिलता है। इस प्रकार की उपासना की पुष्टि स्वयं चरणदास जी और उनके ष्यि रामरूप जी तथा सहजोबाई के काव्य से होती है। इस विधि में साधक सर्वप्रथम मानस रूप में गुरु की पूजा करता है तत्पचात् विभिन्न अंगों में चन्दन आदि लगने के बाद सोलह ऊँकार ध्वनि के साथ पूरक, चौंसठ ऊँकार ध्वनि के साथ कुम्भक और बत्तीस ऊँकार ध्वनि के साथ रेचक करते हुए प्राणायाम की विधि का पालन करते हैं। इस प्रकार के प्राणायाम चौबीस बार करते हैं।"1 यह टिप्पणी चरणदास के सन्दर्भ में उनके प्रिय शिष्य रामरूप द्वारा दी गई है जो अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। यदि किसी कारण इतना सब कुछ न हो सके तो कम से कम बारह बार अवय करना चाहिए। बारी–बारी से बाएँ, दाएँ से पूरक और रेचक का क्रम चलाना चाहिए। प्रथम बार बाएँ से श्वास खींच कर दाएँ से छोड़ना और दूसरी बार दाएँ से श्वास खींच कर बाएँ से छोड़ना चाहिए। भक्त को मनसोपचार सेवा करनी चाहिए ।

मुख्य बिन्दु :– संत चरण दास के काव्य में मनसोपचार सेवा , आत्म पूजा , भक्ति दर्शन , आलोच्य काव्य , वैष्णव भावना , धर्म साधना एवं निष्कर्ष ।

संत चरण दास के काव्य में मनसोपचार सेवा :–

चरणदास जी संत, भक्त के साथ योगी भी थे। वे यौगिक क्रियाओं को जानते थे। उन्होंने 'अष्टांग योग' में परमेश्वर से मिलने की साक्षात्कार करने की विधि को अच्छी तरह से स्पष्ट किया है। भक्ति सागर में 'शब्द वर्णन' के अन्तर्गत मनसोपचार सेवा (आत्मपूजा) के विषय में कहते हैं कि मन से, राग से, अनुराग से, प्रभु की उपासाना इस प्रकार से की जा सकती है –

ये मन आतम पूजा कीजै।

जितनी पूजा जगके माहीं, सबहुन को फल लीजैं।

जो जो देही ठाकुरद्वारे, तिनमें आप विराजैं।

देवल में देवत हैं परगट, आछी विधिसों राजैं।

त्रैगुण भवन सँभारि पूजिये, अनरस होन न पावैं।

जैसेको तैसाही परसौ, प्रेम अधिक उपजावैं।

घट घट सूझै कोइ यक, बूझै गुरु शुकदेव बतावैं।

चरणदास यह सेवन कीन्हे, जीवन मुक्त फल पावैं। 2

इस प्रकार की पूजा भी नवधा भक्ति के अन्तर्गत ही मानी जा सकती है परन्तु वह अन्तर्मुखी है और उसका सारा उपचार सूक्ष्म और अन्तर्मन में ही निहित है। संत चरणदास बारम्बार उस परमात्मा में मन को रमाने की बात कहते हैं। आन्तरिक ध्यान, योग और सुरति निरति द्वारा ब्रह्म से साक्षात्कार करके अनाहत ध्वनि को सुन, चरणदास अपने गुरु शुकदेव के प्रति आस्था भी प्रकट करते हैं और ऐसे गुरु का शिष्य होने पर गौरवान्वित भी होते हैं।

आरति रमता राम कि कीजै, अन्तर्ध्यान निरखि सुखलीजै।।

चेतन चौकी सतको आसन, मगनरूप तकिया धरि दीजै।

सोंहथाल खैंचि मन धरिया, सुरति निरत दोउ बाती बरिया।।

योग युगति सूं आरति साजी, अनहद घंट आपसूं बाजी।

सुमति सांझकी बिरियाआई, पाँच पचीस मिलि आरति गाई।

चरणदास शुकदेव को चेरो, घट घट दर्शै साहब मेरो।3

संत चरणदास जी चरणदासी सम्प्रदाय के प्रवर्तक रूप में जाने जाते हैं। इनकी भक्ति के सारे मार्ग राधा और कृष्ण तक जाते हैं अर्थात् उनके उपास्य राधा कृष्ण हैं। श्रीमद्भागवत उनका प्रेरणा ग्रन्थ है, धाम वृन्दावन है, मुक्ति सामिप्य है, तीर्थ गंगाजी है, व्रत एकादा है, क्षमा, शील, संतोष और दया ये चारों सद्गुण जीवन के मूल आधार हैं। संत चरणदास जी को भगवान श्री कृष्ण की आठवीं पीढ़ी का प्राकट्य माना गया है। भगवान शुकदेव जी महाराज से सुखतार में जब संत चरणदास जी दीक्षा लेने गए उस समय भगवान शुकदेव जी ने कहा कि आपने कृष्ण के अंश रूप में अवतार लिया है और इस पृथ्वी पर कई बार ऐसे महान संत (पुरुष) जीवात्मा का कल्याण करने के लिए जन्म लेते हैं।

चरणदास जी भक्ति दर्शन की व्यापकता, भाव, विचाराभिव्यक्ति और आचार चारों स्तरों पर करते हैं। यदि उनके युग के राजनीतिक, सामाजिक परिदृय को देख कर उनकी भक्ति एवं आचार पद्धति का अवलोकन करें तो उनकी उदार सांस्कृतिक दृष्टि का उच्च स्तर पर पता चल जाता है। अपने भक्ति दर्शन से वे ऐसा कर पाए हैं और इस भक्ति का ज्ञान उनको उनके सतगुरु शुकदेव ने कराया है।

दूसर के बालक हुतै, भक्ति बिना कंगाल।

गुरु शुकदेव कृपा करि, हरि धन किए निहाल।4

भक्ति विधान में आ जाने से चरणदास की व्यक्तिगत और सामाजिक सीमाओं का अन्त हो गया है। वे ससीम से असीम की ओर प्रस्थान कर गए। उनके भावों, विचारों और आचरण के सीमा प्रसंग के कारण उनके क्षेत्र का विस्तार हो गया। उन्होंने भक्ति बोध होने तक अपनी सारी सीमाओं से मुक्ति प्राप्त कर ली और उन्होंने अपने भक्ति के मार्ग में जो कुछ अनुभव किया, उस सच्चाई को अभिव्यक्ति देते हुए चरणदास कहते हैं–

जाति बरण कुल मन गया, गया देह अभिमान।

अपने मुख सूं क्या कहूँ, जग ही करे बखान।5

इस तरह आलोच्य काव्य में आत्मपूजा भी भक्ति का एक माध्यम मार्ग है। समग्रता से अगर देखें तो यह कहा जा सकता है कि भक्ति चाहे किसी भी रूप में की गई हो उसमें मूल तत्व आराध्य के प्रति निष्काम समर्पण और प्रेम का भाव होता है। बिना प्रेम के भक्ति की कल्पना नहीं की जा सकती। उनके समकालीन संत लालदास ने भी इसका समर्थन करते हुए कहा है कि आपत्ति काल में तो हरि का स्मरण सभी करते हैं परन्तु जो सदैव हरि में ही रत रहता है वही सच्ची भक्ति है।

वैष्णव भावना की महत्त्वपूर्ण बात इष्ट देव के प्रति रति भाव है जिसे तुलसीदास से लेकर चरणदास तक सभी ने एक मत से स्वीकार किया है। अतः अन्त में कहा जा सकता है कि आत्मपूजा भक्ति का वह पायदान है जहाँ खड़े होकर भक्त अपने भगवान को अपने ही मन मन्दिर में सहजता से देख सकते हैं। इसमें प्रेम भावना का होना अत्यावयक है क्योंकि सच्चे प्रेमाभाव के साथ की गई आत्मपूजा से ही सफलता सम्भव है।

भारतीय धर्म साधना में भक्ति मार्ग का विशिष्ट स्थान है। परम वैराग्यशील बनकर इष्टदेव की उपासना में रत रहना ही सच्ची भक्ति है। भक्त चरणदास ने 'भक्ति सागर' ग्रंथ की रचना कर भक्ति व ज्ञान का सुन्दर विवेचन किया है। हठयोग की क्रियाओं का सांगोपांग विवेचन किया गया है। चरणदास जी ने ब्रह्म को अचल, अविनाशी आदि पुरुष, जगदीश, जगपति रूप में स्वीकारा है। वह निर्विकार, निर्लेप है। इनका मानना है 'ज्ञानात् न मुक्ति' ज्ञान के बिना मुक्ति

नहीं हो सकती है। ब्रह्म ज्ञान जब तक अनुभव–अनुभूति में नहीं बदल जाता है तब तक उसकी सार्थकता नहीं। ज्ञान की अनुभूति ही भक्ति है। इनका निर्गुण ब्रह्म ही राम है और राम ही ब्रह्म है।

चरणदास ने साधना की दृष्टि से नवधा भक्ति का उपदेश दिया है। श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पाद सेवन, अर्चन, वन्दन, दास्य, साख्य और आत्म निवेदन, नौ प्रकार से किये जाने के कारण इन साधनाओं को नवधा भक्ति कहा जाता है। चरणदास ने माना है भगवत्प्राप्ति बिना भगवान की कृपा के नहीं होती है। परमेश्वर सर्वत्र है। मन में स्मरण करते हुए ईश्वर में मन रमाना चाहिये।

चरणदास ने भक्ति सागर ग्रंथ में पौराणिक और उपनिषदों की कथाओं के माध्यम से अनेक उदाहरण दिये। जिनमें भक्त प्रहलाद ने हरिनाम मंत्र जपकर भगवान विष्णु को पा लिया था, अक्रूर जी ने निर्भय होकर भगवत चिन्हों के दर्शन तथा उनके गुणों के श्रवण के द्वारा अक्रूर में प्रकट हुआ। विष्णु ने पुरुषार्थ के बल पर लक्ष्मी को अपने वश में किया है। पृथु ने सनत्कुमार से ज्ञान प्राप्त कर योग द्वारा परम तत्त्व की प्राप्ति की। राजा बलि के मन में भगवान विष्णु के प्रति एकनिष्ठ भक्ति एवं अटूट समर्पण भाव था। दास्य भक्ति के परम आदर्श हनुमान जी महाराज हैं। भक्ति में ईश्वर के प्रति मित्रता का भाव रखकर उपासना की जाती है। अर्जुन का साख्य, परीक्षित को श्रवण तथा शुकदेव ने कीर्तन द्वारा मुक्ति पाई।

भक्ति प्रेम का ही स्वरूप है। मानव के हृदय में जब तक प्रेम का स्फुरन नहीं होगा तब तक उसका शरीर मात्र पिंड ही रहेगा। प्रेम के द्वारा परमात्मा को प्राप्त किया जाता है। भक्ति प्रेम के विकास की चरम अवस्था है। भक्त मानवीय स्वरूप में ही ब्रह्म स्वरूप की उपलब्धि कर लेता है। भक्ति तो हमारी भावनाओं का ही विस्तार है। प्रेम भक्ति द्वारा ही आत्मा परमात्मा का साक्षात्कार होता है। प्रेमा भक्ति में दोनों एक दूसरे के पूरक होते हैं।

साख्य भक्ति में भक्त अपने इष्ट के प्रति सखा भाव मानकर उपासना करता है। इनके पुरुषोत्तम तत्त्व ही परम तत्त्व है। इन्होंने ऊँ की ध्वनि में ही ब्रह्म तत्त्व को स्वीकारा है। जिसकी व्याख्या निराकार और साकार दोनों रूपों में होती है, जो निरन्तर राधा कृष्ण के रूप में लीलामय है। वृन्दावन स्नेह का देश है। भगवान का विग्रह है। इनके प्रेम बिना भगवत प्रेम दुर्लभ है। वृन्दावन राधा और कृष्ण के दर्शन के लिए आदर्श है। स्वयं चरणदास भी सखी रूप में श्री कृष्ण की आराधना करते थे। वर्तमान में भी चरणदास के धामों में साख्य भाव का प्रभाव देखने को मिलता है।

प्रेमाभक्ति का चरम ही परा भक्ति है। चरणदास की मान्यता है मुक्ति प्राप्ति के बाद परा भक्ति की प्राप्ति होती है। ब्रह्म रूपी स्थिति का नाम भक्ति है। रागात्मिका भक्ति की चरमावस्था है। आत्मा ब्रह्ममय हो जाती है, द्वैत नहीं रहता है। समभाव वाला साधक परा भक्ति के द्वारा ब्रह्म में लीन हो जाता है। चरणदास के अनुसार जिसमें ज्ञाता, ध्यान तथा ध्येय पूर्णतः एक हो जाते हैं। आराध्य तथा आराधक में एक ही रह जाता है। यह आनन्द की स्थिति है।

चरणदास के काव्य में लीला तत्त्व, धाम तत्त्व, रासलीला तत्त्व के साथ भक्ति अपनी चरम पराकाष्ठा पर पहुंचती है। चरणदास कृष्ण की लीलाओं के वर्णन में प्रेम में बावरे हो गये हैं। वृन्दावन को अपने अन्तर्मन में मानते हैं और राधाकृष्ण के रास विहार का अनुभव करते हैं। रासलीला तत्त्व में चरणदास को अखंड रास का अनुभव होता है। इनका काव्य भक्ति, ज्ञान और योग की त्रिवेणी स्वरूप है।

चरणदास मनसोपचार सेवा द्वारा गुरु पूजा के साथ ऊँकार ध्वनि के साथ प्राणायाम की विधि का पालन करते हैं। चरणदास आत्मपूजा, भक्ति से अपने ब्रह्म को सहजता से ज्ञान, योग और प्रेम से प्राप्त कर लेते हैं।

इस प्रकार से कह सकते हैं चरणदास निर्गुण निराकार ब्रह्म की सखी भाव से सगुण भक्ति करते हैं। 'श्रीमद्भागवत' के अनुसार चरणदास ने ब्रह्म का कर्तृत्व और कर्मत्व दोनों ही रूप सिद्ध किये हैं। यह जगत ब्रह्म से भिन्न नहीं है। ब्रह्म की चार अवस्थाएँ होती हैं। सृष्टि रचने के पूर्व ब्रह्म का प्रागभाव, सृष्टि रूप हो जाने पर अन्योन्याभाव प्रलय हो जाने पर विध्वंस भाव और तीनों भाव में ब्रह्म ही सत्य है। वही अतीत भाव है। इन्हीं को चार भेद कहते हैं। चरणदास ने 'अष्टांग योग' में आठवें अंग समाधी द्वारा जीवात्मा के ब्रह्ममय होने की स्थिति स्पष्ट की है। अनहद ध्यान की स्थिति पर पहुँचकर साधक ब्रह्ममय हो जाता है। 'पंचोपनिषद' में योग भक्ति के द्वारा आनन्द की प्राप्ति बताई है। ईश्वर को अलौकिक दिव्य दृष्टि द्वारा अपने अन्तःकरण में अनुभव कर लेना ब्रह्मज्ञान है, इसलिए चरणदास ओंकार को ही ब्रह्म मानते हैं। जीव को जब ज्ञान हो जाता है तो वह परमात्मा हो जाता है।

संत चरणदास के काव्य में ईवर के निर्गुण रूप के साथ–साथ उसके सगुण रूप का भी बखान किया है। संत चरणदास ने बताया है कि सच्ची भक्ति के बल पर ही मानव के अन्दर पनपने वाले व्यभिचारों को रोका जा सकता है। काम, क्रोध, मोह, मद, माया, लोभ, तृष्णा आदि मानवीय बुराइयों को ईा भजन व ध्यान, साधना में मन लगाकर धीरे–धीरे भगाया जा सकता है। संत चरणदास ने भक्ति में दृढ़ता के भाव प्रकट किए हैं।

भक्ति का मार्ग कठिन जरूर है किन्तु सेवक, साधक सच्चे मन से अपने इष्टदेव को याद करें तो वे जरूर उन्हें अनुभव कराएँगे। सेवक की हर मनोकामना को अवय पूरा करते हैं। भक्ति के दौरान मधुरता को बनाए रखना चाहिए। संत चरणदास ने मन को पूर्णतः शुद्ध रखना आवयक बताया है। मन पर नियंत्रण व आत्म संयम का भाव होना आवयक है। अल्पआयु में ही घर–परिवार को छोड़कर ईा वन्दना, गुणगान, भजन, कीर्तन, ध्यान, साधना के प्रति आकृष्ट होने वाले चरणदास जी का हमारा मानवीय समाज ऋणी है। ऐसे महान् संत समाज के लिए मार्ग प्रर्दाक व सचेतक का कार्य करते हैं।

निष्कर्ष :–

निष्कर्ष रूप में यही कहा जा सकता है कि संत चरणदास की भक्ति निष्काम व एकात्म भाव के साथ की गई प्रतीत होती है। कबीर के समान अपना स्थान बनाए रखते हुए प्रतीत होते हैं। सामान्य जन के लिए भी इनके भक्ति सिद्धान्त सहज ग्राह्य प्रतीत होते हैं। भक्ति–साधना से मानव समाज का कल्याण, सदैव सर्वोपरि दिखाई देता है, ऐसा मेरा मानना है। भक्ति के क्षेत्र में संत चरणदास अपनी विाष्ट पहचान आज भी रखते हैं।

सन्दर्भ सूची :–

1ण गुरु भक्ति प्रका–रामरूप जी पृ.सं. 53–54
2ण शब्द वर्णन–भक्ति सागर–चरणदास पृ.सं. 432
3ण शब्द वर्णन–भक्ति सागर–चरणदास पृ.सं. 320
4ण भक्ति सागर–चरणदास पृ.सं. 116
5ण भक्ति सागर–चरणदास पृ.सं. 116